वेलेन्टाइन डे नहीं

मातृ-पितृ पूजन दिवस

मनायें

(14 फरवरी)

संत श्री आसारामजी बापू द्वारा प्रेरित
ॐ
बाल संस्कार केन्द्र

भारतभूमि ऋषि-मुनियों, अवतारों की भूमि है। पहले यहाँ लोग आपस में मिलते तो 'राम-राम' कहकर एक-दूसरे का अभिवादन करते थे। दो बार 'राम' कहने के पीछे कितना सुंदर अर्थ छुपा है कि सामनेवाले व्यक्ति तथा मुझमें - दोनों में उसी राम-परमात्मा, ईश्वर की चेतना है, उसे प्रणाम हो। ऐसी दिव्य भावना को 'प्रेम' कहते हैं। निर्दोष, निष्कपट, निःस्वार्थ, निर्वासनिक स्नेह को 'प्रेम' कहते हैं। इस प्रकार एक-दूसरे से मिलने पर भी ईश्वर की याद ताजा हो जाती थी, पर आज ऐसी पवित्र भावना तो दूर की बात है, पतन करनेवाले 'आकर्षण' को ही 'प्रेम' माना जाने लगा है।

माता-पिता की प्रदक्षिणा व उन्हें प्रणाम करके असीम आशीर्वाद प्राप्त करने की कुंजी बताते हुए बालस्वरूप भगवान गणपति।

14 फरवरी को पश्चिमी देशों में युवक-युवतियाँ एक-दूसरे को ग्रीटिंग कार्ड्स, फूल आदि देकर 'वेलेन्टाइन डे' मनाते हैं। यौन-जीवन संबंधी परम्परागत नैतिक मूल्यों का त्याग करनेवाले देशों की चारित्रिक सम्पदा नष्ट होने का मुख्य कारण ऐसे 'वेलेन्टाइन डे' हैं, जो लोगों को अनैतिक जीवन जीने को प्रोत्साहित करते हैं। इससे उन देशों का अधःपतन हुआ है। इससे जो समस्याएँ पैदा हुईं, उनको मिटाने के लिए वहाँ की सरकारों को स्कूलों में 'केवल संयम' अभियानों पर करोड़ों डॉलर (अरबों रुपये) खर्च करने पर भी सफलता नहीं मिलती। अब यह कुप्रथा हमारे भारत में भी पैर जमा रही है। हमें अपने परम्परागत नैतिक मूल्यों की रक्षा करने के लिए ऐसे 'वेलेन्टाइन डे' का बहिष्कार करना चाहिए। इस संदर्भ में विश्ववंदनीय पूज्य संत श्री आसारामजी बापू ने की है एक नयी पहल - 'मातृ-पितृ पूजन दिवस'।

'वेलेन्टाइन डे' कैसे शुरू हुआ ? और आज...

रोम के राजा क्लाउडियस ब्रह्मचर्य की महिमा से परिचित रहे होंगे, इसलिए उन्होंने अपने सैनिकों को शादी करने के लिए मना किया था ताकि वे शारीरिक बल और मानसिक दक्षता से युद्ध में विजय प्राप्त कर सकें। सैनिकों को शादी करने के लिए जबरदस्ती मना किया गया था, इसलिए वेलेन्टाइन, जो स्वयं ईसाई पादरी होने के कारण ब्रह्मचर्य के विरोधी नहीं हो सकते थे, ने गुप्त ढंग से उनकी शादियाँ करायीं। राजा ने उनको दोषी घोषित किया और उन्हें फाँसी दे दी गयी। सन् 496 से पोप गेलेसियस ने उनकी याद में 'वेलेन्टाइन डे' मनाना शुरू किया।

'वेलेन्टाइन डे' मनानेवाले लोग वेलेन्टाइन का ही अपमान करते हैं क्योंकि वे शादी के पहले ही अपने प्रेमास्पद को वेलेन्टाइन कार्ड भेजकर उनसे प्रणय-संबंध स्थापित करने का प्रयास करते हैं। यदि वेलेन्टाइन इससे सहमत होते तो वे शादियाँ कराते ही नहीं।

अतः भारत के युवान-युवतियाँ शादी से पहले प्रेमदिवस के बहाने अपने ओज-तेज-वीर्य का नाश करके सर्वनाश न करें और मानवमात्र के परम हितकारी पूज्य बापूजी के मार्गदर्शन में अपने यौवन-धन, स्वास्थ्य और बुद्धि की सुरक्षा करें। मातृ-पितृ पूजन दिवस मनायें।

– डॉ. प्रे.खो. मकवाणा

मातृ-पितृभक्त श्रवण कुमार

अभिभावकों एवं बाल संस्कार केन्द्र शिक्षकों के लिए निवेदन

दिनांक 14 फरवरी को अपने-अपने घर में अथवा सामूहिक रूप से विद्यालय में आयोजन कर 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनायें। बाल संस्कार केन्द्र शिक्षक अपने केन्द्र में बच्चों के माता-पिता को बुलाकर सामूहिक कार्यक्रम कर सकते हैं। युवा सेवा संघ में भी इसे मनायें। पूज्यश्री के पावन संदेश को (जो अगले पृष्ठ पर है) अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुँचायें। अपने क्षेत्र के समाचार पत्र में पूज्यश्री का संदेश प्रकाशित करवायें।

विश्वमानव की मंगलकामना से भरे पूज्य संत श्री आसारामजी बापू का परम हितकारी संदेश

प्रेमदिवस (वेलेन्टाइन डे) के नाम पर विनाशकारी कामविकार का विकास हो रहा है, जो आगे चलकर चिड़चिड़ापन, डिप्रेशन, खोखलापन, जल्दी बुढ़ापा और मौत लानेवाला दिवस साबित होगा। अतः भारतवासी इस अंधपरंपरा से सावधान हों !

'इन्नोसन्टी रिपोर्ट कार्ड' के अनुसार 28 विकसित देशों में हर साल 13 से 19 वर्ष की 12 लाख 50 हजार किशोरियाँ गर्भवती हो जाती हैं। उनमें से 5 लाख गर्भपात कराती हैं और 7 लाख 50 हजार कुँवारी माता बन जाती हैं। अमेरिका में हर साल 4 लाख 94 हजार अनाथ बच्चे जन्म लेते हैं और 30 लाख किशोर-किशोरियाँ यौन रोगों के शिकार होते हैं।

यौन संबंध करनेवालों में 25% किशोर-किशोरियाँ यौन रोगों से पीड़ित हैं। असुरक्षित यौन संबंध करनेवालों में 50% को गोनोरिया, 33% को जैनिटल हर्पिस और एक प्रतिशत को एड्स का रोग होने की संभावना है। एड्स के नये रोगियों में 25% 22 वर्ष से छोटी उम्र के होते हैं। आज अमेरिका के 33% स्कूलों में यौन शिक्षा के अंतर्गत 'केवल संयम' की शिक्षा दी जाती है। इसके लिए अमेरिका ने 40 करोड़ से अधिक डॉलर (20 अरब रुपये) खर्च किये हैं।

प्रेमदिवस जरूर मनायें लेकिन प्रेमदिवस में संयम और सच्चा विकास लाना चाहिए। युवक-युवती मिलेंगे तो विनाश-दिवस बनेगा। इस दिन बच्चे-बच्चियाँ माता-पिता का आदर-पूजन करें और उनके सिर पर पुष्प रखें, प्रणाम करें तथा माता-पिता अपनी संतानों को प्रेम करें। संतान अपने माता-पिता के गले लगें। इससे वास्तविक प्रेम का विकास होगा। बेटे-बेटियाँ माता-पिता में ईश्वरीय अंश देखें और माता-पिता बच्चों में ईश्वरीय अंश देखें।

तुम भारत के लाल और भारत की लालियाँ (बेटियाँ) हो। प्रेमदिवस मनाओ, अपने माता-पिता का सम्मान करो और माता-पिता बच्चों को स्नेह करें। करोगे न बेटे ऐसा ! पाश्चात्य लोग विनाश की ओर जा रहे हैं। वे लोग ऐसे दिवस मनाकर यौन रोगों का घर बन रहे हैं, अशांति की आग में तप रहे हैं। उनकी नकल तो नहीं करोगे ?

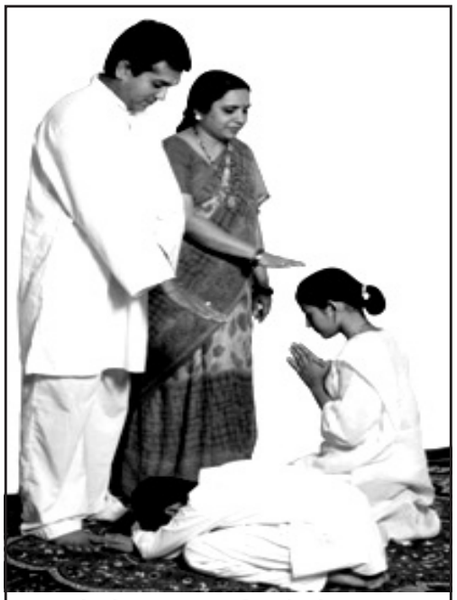

मातृदेवो भव। पितृदेवो भव।

मेरे प्यारे युवक-युवतियो और उनके माता-पिता ! आप भारतवासी हैं। दूरदृष्टि के धनी ऋषि-मुनियों की संतान हैं। प्रेमदिवस (वेलेन्टाइन डे) के नाम पर बच्चों, युवान-युवतियों के ओज-तेज का नाश हो, ऐसे दिवस का त्याग करके माता-पिता और संतानो ! प्रभु के नाते एक-दूसरे को प्रेम करके अपने दिल के परमेश्वर को छलकने दें। काम-विकार नहीं, रामरस, प्रभुप्रेम, प्रभुरस...

मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। बालिकादेवो भव। कन्यादेवो भव। पुत्रदेवो भव।

* माता-पिता का पूजन करने से काम राम में बदलेगा, अहंकार प्रेम में बदलेगा, माता-पिता के आशीर्वाद से बच्चों का मंगल होगा।

पाश्चात्यों का अनुकरण आप क्यों करो ? आपका अनुकरण करके वे सद्भागी हो जायें।

जो राष्ट्रभक्त नागरिक यह राष्ट्रहित का कार्य करके भावी सुदृढ़ राष्ट्र-निर्माण में साझीदार हो रहे हैं वे धनभागी हैं और जो होनेवाले हैं उनका भी आवाहन किया जाता है।

कैसे मनायें 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' ?

* माता-पिता को स्वच्छ तथा ऊँचे आसन पर बैठायें।
* बच्चे-बच्चियाँ माता-पिता के माथे पर कुंकुम का तिलक करें।
* तत्पश्चात् माता-पिता के सिर पर पुष्प अर्पण करें तथा फूलमाला पहनायें।
* माता-पिता भी बच्चे-बच्चियों के माथे पर तिलक करें एवं सिर पर पुष्प रखें। फिर अपने गले की फूलमाला बच्चों को पहनायें।
* बच्चे-बच्चियाँ थाली में दीपक जलाकर माता-पिता की आरती करें और अपने माता-पिता एवं गुरु में ईश्वरीय भाव जगाते हुए उनकी सेवा करने का दृढ़ संकल्प करें।
* बच्चे-बच्चियाँ अपने माता-पिता के एवं माता-पिता बच्चों के सिर पर अक्षत एवं पुष्पों की वर्षा करें।
* तत्पश्चात् बच्चे-बच्चियाँ अपने माता-पिता की सात बार परिक्रमा करें।
* बच्चे-बच्चियाँ अपने माता-पिता को झुककर विधिवत् प्रणाम करें तथा माता-पिता अपनी संतान को प्रेम से सहलायें। संतान अपने माता-पिता के गले लगे। बेटे-बेटियाँ माता-पिता में ईश्वरीय अंश देखें और माता-पिता बच्चों में ईश्वरीय अंश देखें।
* इस दिन बच्चे-बच्चियाँ पवित्र संकल्प करें : ''मैं अपने माता-पिता व गुरुजनों का आदर करूँगा/करूँगी। मेरे जीवन को महानता के रास्ते ले जानेवाली उनकी आज्ञाओं का पालन करना मेरा कर्तव्य है और मैं उसे अवश्य पूरा करूँगा/करूँगी।''
* इस समय माता-पिता अपने बच्चों पर स्नेहमय आशीष बरसायें एवं उनके मंगलमय जीवन के लिए इस प्रकार शुभ संकल्प करें : ''तुम्हारे जीवन में उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति व पराक्रम की वृद्धि हो। तुम्हारा जीवन माता-पिता एवं गुरु की भक्ति से महक उठे। तुम्हारे कार्यों

में कुशलता आये। तुम **त्रिलोचन** बनो - तुम्हारी बाहर की आँख के साथ भीतरी विवेक की कल्याणकारी आँख जागृत हो। तुम पुरुषार्थी बनो और हर क्षेत्र में सफलता तुम्हारे चरण चूमे।''

❊ बच्चे-बच्चियाँ माता-पिता को 'मधुर प्रसाद' खिलायें एवं माता-पिता अपने बच्चों को प्रसाद खिलायें।

❊ बालक गणेशजी की पृथ्वी-परिक्रमा, भक्त पुण्डलीक की मातृ-पितृ भक्ति, श्रवणकुमार की मातृ-पितृ भक्ति - इन कथाओं का पठन करें अथवा कोई एक व्यक्ति कथा सुनाये और अन्य लोग श्रवण करें।

❊ माता-पिता **'बाल संस्कार', 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश', 'तू गुलाब होकर महक', 'मधुर व्यवहार'** - इन पुस्तकों को अपनी क्षमतानुरूप बाँटें-बँटवायें तथा प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा स्वयं पढ़ने का व बच्चों से पढ़ाने का संकल्प लें।

❊ श्रीगणेश, पुण्डलीक, श्रवणकुमार आदि मातृ-पितृ भक्तों की कथाओं को नाटक के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं।

❊ इस दिन सभी मिलकर **'श्री आसारामायण पाठ'** व आरती करके बच्चों को मधुर प्रसाद बाँटें।

❊ नीचे लिखी पंक्तियों जैसी मातृ-पितृ भक्ति की कुछ पंक्तियाँ गत्ते पर लिखके बोर्ड बनाकर आयोजन-स्थल पर लगायें।

1. बहुत रात तक पैर दबाते, भरे कंठ पितु आशिष पाते।
पुत्र तुम्हारा जगत में, सदा रहेगा नाम। लोगों के तुमसे सदा, पूरण होंगे काम॥

2. मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव।

3. माता-पिता और गुरुजनों का आदर करनेवाला चिरआदरणीय हो जाता है। **- परम पूज्य बापूजी**

4. माता और पिता का सम्मान

मातृ-पितृ-गुरु भक्ति

अपनी भारतीय संस्कृति बालकों को छोटी उम्र में ही बड़ी ऊँचाई पर ले जाना चाहती है। इसमें सरल, छोटे-छोटे सूत्रों द्वारा ऊँचा, कल्याणकारी ज्ञान बच्चों के हृदय में बैठाने की सुंदर व्यवस्था है। अपनी संस्कृति कहती है :

मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव।

माता-पिता एवं गुरु हमारे हितैषी हैं, अतः हम उनका आदर तो करें ही, साथ ही उनमें भगवान के दर्शन कर उन्हें प्रणाम करें, उनका पूजन करें। आज्ञापालन के लिए आदरभाव पर्याप्त है परंतु उसमें प्रेम की मिठास लाने हेतु पूज्यभाव आवश्यक है। पूज्यभाव से आज्ञापालन बंधनरूप न बनकर पूजारूप पवित्र, रसमय एवं सहज कर्म हो जायेगा।

पानी को ऊपर चढ़ाना हो तो बल लगाना पड़ता है। लिफ्ट से कुछ ऊपर ले जाना हो तो ऊर्जा खर्च करनी पड़ती है। पानी को भाप बनकर ऊपर उठना हो तो ताप सहना पड़ता है। गुल्ली को ऊपर उठने के लिए डंडा सहना पड़ता है। परंतु प्यारे विद्यार्थियो! कैसी अनोखी है अपनी भारतीय सनातन संस्कृति कि जिसके ऋषियों-महापुरुषों ने इस सूत्र द्वारा जीवन-उन्नति को एक सहज, आनंददायक खेल बना दिया।

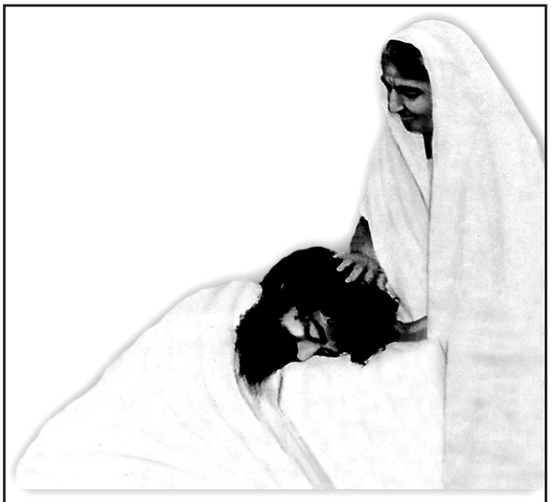

विश्व में चिरआदरणीय बने हुए सद्गुरुदेव परम पूज्य संत श्री आसारामजी बापू अपनी महान वात्सल्यमयी माता पूजनीया श्री माँ महँगीबा की गोद में...

इस सूत्र को जिन्होंने भी अपना बना लिया वे खुद आदरणीय बन गये, पूजनीय बन गये। भगवान श्रीरामजी ने माता-पिता व गुरु को देव मानकर उनके आदर-पूजन व सेवा की ऐसी मर्यादा स्थापित की कि आज भी 'मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम की जय' कहकर उनकी यशोगाथा गायी जाती है। भगवान श्रीकृष्ण ने नंदनंदन, यशोदानंदन बनकर नंद-घर में आनंद की वर्षा की, उनकी प्रसन्नता प्राप्त की तथा गुरु सांदीपनिजी के आश्रम में रहकर उनकी खूब प्रेम एवं निष्ठापूर्वक सेवा की। उन्होंने युधिष्ठिर महाराज के राजसूय यज्ञ में उपस्थित गुरुजनों, संत-महापुरुषों एवं ब्राह्मणों के चरण पखारने की सेवा भी अपने जिम्मे ली थी। उनकी ऐसी कर्म-कुशलता ने उन्हें 'कर्मयोगी भगवान श्रीकृष्ण' के रूप में जन-जन के दिलों में पूजनीय स्थान दिला दिया। मातृ-पितृ एवं गुरु भक्तों की पावन माला में भगवान गणेशजी, पितामह भीष्म, श्रवणकुमार, पुण्डलिक, आरुणि, उपमन्यु, तोटकाचार्य आदि कई सुरभित पुष्प हैं।

तोटक नाम का आद्य शंकराचार्यजी का शिष्य, जिसे अन्य शिष्य अज्ञानी, मूर्ख कहते थे, उसने 'आचार्यदेवो भव।' सूत्र को दृढ़ता से पकड़ लिया। परिणाम सभी जानते हैं कि सद्गुरु-कृपा से उसे बिना पढ़े ही सभी शास्त्रों का ज्ञान हो गया और वे 'तोटकाचार्य' के रूप में विख्यात व सम्मानित हुआ। वर्तमान युग का एक बालक बचपन में देर रात तक अपने पिताश्री के चरण दबाता था। उसके पिताजी उसे बार-बार कहते : ''बेटा! अब सो जाओ, बहुत रात हो गयी है।'' फिर भी वह प्रेमपूर्वक आग्रह करते हुए सेवा में लगा रहता था। उसके पूज्य पिता अपने पुत्र की अथक सेवा से प्रसन्न होकर उसे आशीर्वाद देते :

पुत्र तुम्हारा जगत में, सदा रहेगा नाम। लोगों के तुम से सदा, पूरण होंगे काम॥

अपनी माताश्री की भी उसने उनके जीवन के आखिरी क्षण तक खूब सेवा की ।

युवाअवस्था प्राप्त होने पर उस बालक ने भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण की भाँति गुरु के श्रीचरणों में खूब आदर-प्रेम रखते हुए सेवा-तपोमय जीवन बिताया। गुरुद्वार पर सहे वे कसौटी-दुःख उसके लिए आखिर परम सुख के दाता साबित हुए। आज वही बालक महान संत के रूप में विश्ववंदनीय होकर करोड़ों-करोड़ों लोगों के द्वारा पूजित हो रहा है। ये महापुरुष अपने सत्संग में यदा-कदा अपने गुरुद्वार के जीवन-प्रसंगों का जिक्र करके कबीरजी का यह दोहा दोहराते हैं :

गुरु के सम्मुख जाय के सहे कसौटी दुःख । कह कबीर ता दुःख पर कोटि वारूँ सुख ॥

सद्गुरु जैसा परम हितैषी संसार में दूसरा कोई नहीं है । **'आचार्य देवो भव ।'** यह शास्त्र-वचन मात्र वचन नहीं है, यह सभी महापुरुषों का अपना अनुभव है ।

'मातृदेवो भव । पितृदेवो भव । आचार्यदेवो भव ।' यह सूत्र इन महापुरुष के जीवन में मूर्तिमान बनकर प्रकाशित हो रहा है और इसीकी फलसिद्धि है कि इनकी पूजनीया माताश्री व सद्गुरुदेव - दोनों ने अंतिम क्षणों में अपना शीश अपने प्रिय पुत्र व शिष्य की गोद में रखना पसंद किया। खोजो तो उस बालक का नाम जिसने मातृ-पितृ-गुरुभक्ति की ऐसी पावन मिसाल कायम की।

आज के बालकों को इन उदाहरणों से मातृ-पितृ-गुरुभक्ति की शिक्षा लेकर माता-पिता एवं गुरु की प्रसन्नता प्राप्त करते हुए अपने जीवन को उन्नति के रास्ते ले जाना चाहिए। ***

माँ-बाप को भूलना नहीं

भूलो सभीको मगर, माँ-बाप को भूलना नहीं । उपकार अगणित हैं उनके, इस बात को भूलना नहीं ॥
पत्थर पूजे कई तुम्हारे, जन्म के खातिर अरे ! पत्थर बन माँ-बाप का, दिल कभी कुचलना नहीं ॥
मुख का निवाला दे अरे ! जिनने तुम्हें बड़ा किया । अमृत पिलाया तुमको, जहर उनके लिए उगलना नहीं ॥
कितने लड़ाये लाड़, सब अरमान भी पूरे किये । पूरे करो अरमान उनके, बात यह भूलना नहीं ॥
लाखों कमाते हो भले, माँ-बाप से ज्यादा नहीं । सेवा बिना सब राख है, मद में कभी फूलना नहीं ॥
संतान से सेवा चाहो, संतान बन सेवा करो । जैसी करनी वैसी भरनी, न्याय यह भूलना नहीं ॥
सोकर स्वयं गीले में, सुलाया तुम्हें सूखी जगह । माँ की अमीमय आँखों को, भूलकर कभी भिगोना नहीं ॥
जिसने बिछाये फूल थे, हरदम तुम्हारी राहों में । उस राहबर की राह के, कंटक कभी बनना नहीं ॥
धन तो मिल जायेगा, मगर माँ-बाप क्या मिल पायेंगे ? पल पल पावन उन चरण की, चाह कभी भूलना नहीं ॥

मात पिता गुरु प्रभु चरणों में...

मात पिता गुरु प्रभु चरणों में प्रणवत् बारम्बार । हम पर किया बड़ा उपकार, हम पर किया बड़ा उपकार ॥ टेक ॥

(1) माता ने जो कष्ट उठाया, वह ऋण कभी न जाये चुकाया । अँगुली पकड़कर चलना सिखाया, ममता की दी शीतल छाया ।
जिनकी गोदी में पलकर हम, कहलाते होशियार । हम पर किया... मात पिता... ॥ टेक ॥

(2) पिता ने हमको योग्य बनाया, कमा-कमाकर अन्न खिलाया । पढ़ा लिखा गुणवान बनाया, जीवन पथ पर चलना सिखाया ।
जोड़-जोड़ अपनी संपत्ति का, बना दिया हकदार । हम पर किया... मात पिता... ॥ टेक ॥

(3) तत्त्वज्ञान गुरु ने दरशाया, अंधकार सब दूर हटाया । हृदय में भक्ति दीप जलाकर, हरिदर्शन का मार्ग बताया ।
बिनु स्वारथ ही कृपा करें वे, कितने बड़े हैं उदार । हम पर किया... मात पिता... ॥ टेक ॥

(4) प्रभु किरपा से नर तन पाया, संत मिलन का साज सजाया । बल, बुद्धि और विद्या देकर, सब जीवों में श्रेष्ठ बनाया ।
जो भी इनकी शरण में आता, कर देते उद्धार । हम पर किया... मात पिता... ॥ टेक ॥

स्थानीय संपर्क :-

मुख्यालय : बाल संस्कार विभाग, अखिल भारतीय
श्री योग वेदांत सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम,
साबरमती, अमदावाद-5. फोन : 079-39877749, 27505010/11.
फैक्स : 079-39877778.
e-mail : bskamd@gmail.com ❖ ashramindia@ashram.org